(17)

खोई हुई निधि

.विद्या शुचिता, सरलता, संयम,घृति, तप-त्याग,
पुनः पल्लवित हों यहाँ, श्रद्धा, दृढ़ अनुराग।
श्रद्धा, दृढ़ अनुराग कहाँ वह निधि है खोयी,
करके याद अतीत भरत भू छिप कर रोयी।
कंचन सुख का मूल कामिनी लगती हृद्या,
शिक्षा से फल-फूल रही है, मात्र अविद्या।

शिव कुमार मिश्र